उदारवाद का मूल्यांकन

यद्यपि उदारवाद एक महत्वपूर्ण विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता व लोककल्याण के आदर्श के बीच संतुलन कायम करती है। अपने समसामयिक रूप में यह स्वतन्त्रता, समानता, लोकतन्त्रीय शासन का समर्थन, लोक कल्याणकारी राज्य एवं धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण में विश्वास व्यक्त करता है, लेकिन फिर भी उदारवादी दर्शन की काफी आलोचनाएं हुई हैं-

1. कुछ आलोचकों ने समकालीन उदारवाद पर प्रथम आरोप यह लगाया कि रॉल्स जैसे विचारकों द्वारा वितरणात्मक न्याय पर नये सिरे से बल देने के कारण यह बुर्जुआ व्यवस्था का समर्थक है जिसका निहितार्थ यह है कि व्यक्ति को अधिक आर्थिक स्वतन्त्रता दी जाए। प्रो0 मिल्टन फ्राइडमैन का कहना है कि ''मुक्त मानव समाज में आर्थिक स्वतन्त्रता पर अधिक जोर दिए जाने के कारण समसामयिक उदारवाद समाजवाद से काफी दूर हो गया है।''
2. एडमण्ड बर्क का उदारवाद पर प्रमुख आरोप यह है कि यह इतिहास और परम्परा का विरोधी है। किसी भी समाज और विचारक के लिए परम्परा व इतिहास से अचानक नाता तोड़ना न तो सम्भव है और न ही उचित।
3. अनुदारवादियों का प्रमुख आरोप यह है कि उदारवाद समाज व राज्य को कृत्रिम मानता है। उदारवादियों की

दम नहीं है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि उदारवाद एक आदर्शवादी विचारधारा है। लेनिन तो सभी उदारवादियों को आरामकुर्सी पर बैठे रहने वाले मूर्ख कहता है। कुछ विचारक इसे विरोधाभासी दर्शन भी कहते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उदारवाद महत्वहीन विचारधारा है। उदारवाद के व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, मानव अधिकार, विधि का शासन धर्म-निरपेक्ष दृष्टिकोण आदि सिद्धान्त उसके महत्व को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। मानवतावाद का समर्थन होने के कारण आज भी उदारवाद शाश्वत् महत्व की विचारधारा है। स्वतन्त्रता व समानता के आदर्श पर जोर देने के कारण यह सभी प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली वाले देशों में समर्थन को प्राप्त है। अन्तर्राष्ट्रीयता और विश्व-शांति के विचार पर जोर देने के कारण यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी अपना स्थान बनाए हुए है। साम्राज्यवाद व निरंकुशवाद के किसी भी रूप का विरोधी होने के कारण यह अपने जीवन के प्रारम्भिक क्षणों से ही मानव चिन्तन का प्रमुख केन्द्र बिन्दू रही है। सत्य तो यह है कि उदारवादी दर्शन ने अपने विकास की लम्बी यात्रा मे समय-समय पर आर्थिक नीति निर्धारकों, राजनीतिज्ञों व समाज सुधारकों के चिन्तन को प्रभावित किया है। आधुनिक समय में यह समाजवाद की विचारधारा से गहरा सरोकार रखती है।

3. अनुदारवादियों का प्रमुख आरोप यह है कि उदारवाद समाज व राज्य को कृत्रिम मानता है। उदारवादियों की दृष्टि में संविदा द्वारा राज्य के निर्माण की बात स्वीकार करना और प्राकृतिक अधिकारों की धारणा में विश्वास करना गलत है। अनुदारवादियों का कहना है कि राज्य व्यक्ति की सामाजिक प्रवृत्तियों का विकसित रूप है, कृत्रिम नहीं।
4. आदर्शवादियों का उदारवाद पर प्रमुख आरोप यह है कि व्यक्ति की निरपेक्ष स्वतन्त्रता का विचार गलत है। लेकिन आधुनिक उदारवादी राज्य द्वारा नियमित स्वतन्त्रता को ही वास्तविक स्वतन्त्रता मानते हैं। इसी कारण आदर्शवादियों की यह आलोचना अधिक प्रासांगिक नहीं है।
5. मार्क्सवादियों का उदारवाद पर प्रमुख आरोप यह है कि यह ऐतिहासिक परम्पराओं की उपेक्षा करता है, राज्य को कृत्रिम मानता है, व्यक्ति की निरपेक्ष स्वतन्त्रता का समर्थन करता है तथा अहस्तक्षेप या यद्भाव्यम् की नीति का समर्थन करता है। आर्थिक क्षेत्र में खुली प्रतिस्पर्धा समाज को दो वर्गों में बांट देती है और इससे पूंजीवाद का ही पोषण होता है। लेकिन समसामयिक उदारवाद मुक्त आर्थिक व्यवस्था पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रबल समर्थक है। इसलिए मार्क्सवादियों की इस आलोचना में भी कोई दम नहीं है।

सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचय देता है। प्राचीन उदारवाद आर्थिक क्षेत्र में निजी उद्यम की स्वतन्त्र का पोषक रहा जबकि आधुनिक उदारवाद व्यक्ति व समाज के हितों के लिए आर्थिक क्षेत्र में भी राज्य के उचित हस्तक्षेप का पक्षधर है। इसका प्रमुख कारण बदली हुई सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियां मानी जाती है। उदारवादियों की नई पीढ़ी ने आर्थिक उदारवाद के परम्परागत सिद्धान्त का खण्डन किया। समाजवाद ने आगमन ने आर्थिक उदारवाद के नए सिद्धान्त को जन्म दिया और नए उदारवाद ने भी समाजवादी सिद्धान्तों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। उदारवाद को नए रूप में लाने का श्रेय बेंथम मिल तथा ग्रीन जैसे विचारकों को जाता है। बैंथम व मिल का उपयोगिता वाद का सिद्धान्त ही 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' के मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर भी प्रतिबन्ध लगाता है। बैंथम का कहना है कि देश की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए राज्य का हस्तक्षेप आवश्यक है। मिल भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का समर्थक होने के बावजूद अहस्तक्षेप की नीति का विरोध करता है। ग्रीन ने भी उदारवाद को जो नया रूप दिया है, वह आधुनिक उदारवाद में 'सामूहिक कल्याण' के विचार का पोषक है। ग्रीन भी व्यक्ति के जीवन को अच्छा बनाने के लिए राज्य की मदद की वकालत करता है। ग्रीन ने लोक कल्याण के विचार का समर्थन किया है जो आधुनिक उदारवाद का प्रमुख सिद्धान्त है। लॉस्की ने भी सामाजिक हित में उद्योगों पर राज्य द्वारा नियन्त्रण लगाने की

त करता है। आधुनिक समय में उदारवादी धर्म- निरपेक्षता के विचार का समर्थन करते हुए विश्व-शांति के विचार का पोषण करते हैं। आधुनिक उदारवाद राज्य के प्रति उदारवादियों द्वारा अपनाए गए नकारात्मक दृष्टिकोण को बदल रहा है। आधुनिक उदारवादी व्यक्ति की बजाय सम्पूर्ण समाज के हितों पर ही बल देते हैं। आधुनिक उदारवादी राज्य के लोक कल्याण के आदर्श को प्राप्त करने के लिए आर्थिक क्षेत्र में भी राज्य के हस्तक्षेप को उचित ठहराते हैं।

समकालीन उदारवाद

मानव की स्वतन्त्रता व गरिमा की रक्षा करना उदारवाद का प्रारम्भ से ही ध्येय रहा है। उदारवाद का पुराना और नया दोनों रूप ही मानव के चयन और निर्णय के क्षेत्र में वृद्धि करके उसके व्यक्तित्व के विकास के प्रबल समर्थन में जुटे रहते हैं। उदारवाद का समकालीन रूप भी परम्परागत उदारवाद की तरह ही निरंकुशवाद विरोधी है। उदारवाद का सारयुक्त लक्षण मानवतावाद है। यह कमजोर का समर्थक और दमनकारी का विरोधी है। समय में परिवर्तन को देखते हुए उदारवादियों ने भी स्वतन्त्रता के नए-नए सूत्र खोजने के प्रयास किए हैं। प्राचीन उदारवाद जहां राज्य व व्यक्ति की स्वतन्त्रता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के लिए हुए था, वहीं समकालीन उदारवाद राज्य और व्यक्ति के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचय देता है। प्राचीन उदारवाद

जिक हित में उद्योगों पर राज्य द्वारा नियन्त्रण लगाने की बात कही है। लॉस्क तथा मैकाइवर ने भी ग्रीन की तरह ही लोककल्याण पर ही अधिक बल दिया है।

आधुनिक उदारवाद का प्रमुख जोर इस बात पर है कि स्वतन्त्रता केवल एक अभाव नहीं है। उपयुक्त रूप में गठित सवैंधानिक तन्त्र के माध्यम से व्यक्ति प्रभावी राजनीतिक क्षमता व्यक्त करने योग्य होना चाहिए। आधुनिक उदारवाद चाहता है कि उपेक्षित वर्गों को नया जीवन देकर उनकी राजनीतिक उदासीनता दूर की जाए और सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया जाए। इसके लिए संसदीय व्यवस्था का पुनर्निर्माण किया जाए और अन्तर्राष्ट्रीय निकायों-जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ आदि को सुदृढ़ करके राज्यों की प्रभुसत्ता को सीमित किया जाए। इसी कारण आज उदारवादी राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को सीमित करना चाहते हैं और अन्तर्राष्ट्रीयता व विश्व शांति के विचार का समर्थन करते हैं। आज उदारवाद मुक्त मानव के सिद्धान्त का विरोध करता है और समाज हित में राज्य के अधिकाधिक हस्तक्षेप को उचित ठहराता है। आज उदारवाद जैसे सकारात्मक राज्य के सिद्धान्त का पोषक है जो समाजवाद को आगे बढ़ाने वाला है। आज समाजवाद को ही 'उदारवाद का वैद्य उत्तरराधिकारी' माना जाता है। आधुनिक उदारवादी राज्य को लोककल्याण का एक साधन मानते हैं अर्थात् उनकी दृष्टि में राज्य सामान्य हित साधन की एक प्रमुख संस्था है। समकालीन उदारवाद राज्य व व्यक्ति की स्वतन्त्रता के विरोधी दावे में संतुलन कायम करता है।